

हिन्दी का शिक्षण शास्त्र - । [F- 8]

इकाई - । : प्राथमिक अंतर पर हिन्दी : पूर्कति के बारे में उसके शिक्षण के उद्देश्य

* बच्चों की दुनिया में हिन्दी

बिहार के कई क्षेत्रों में हिन्दी प्रदेश है, जिसमें अनेक क्षेत्रीय माषाये बोली जाती हैं। यहाँ मैथली, मोजपुरी, सगाही, ओंगका, बिजिजका जैसी अनेकों माषाओं का प्रयोग किया जाता है। बच्चे इन क्षेत्रीय माषाओं के परिवेश से ही जन्म लेते हैं। उनका आरंभिक पालन - पोषण यही होता है। बच्चे यह माषा माटमाषा के रूप से अधिकतर हैं। माटमाषा से यह बात हिन्दी की और बढ़ती है। सामान्यतः बच्चे पर माटमाषा का ही प्रयोग करते हैं। लैकिन विद्यालय का अपना कुछ मानक माषा होता है, यहाँ हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। बच्चों का विद्यालय जाने के बाद माटमाषा की बात हिन्दी की और बढ़ती है। माटमाषा की सदृश भौतिकीय सीख जाती है। विद्यालय में शिक्षकों द्वारा हिन्दी माषा का ही प्रयोग किया जाता है, और बच्चे इसे आकानी की समझ में लेते हैं। क्योंकि माटमाषा और हिन्दी माषा में शोड़ा-सा का ही पक्के होता है। और धीरे - धीरे ३० हें हिन्दी माषा के अनेक कौशलों से कृपया कराया जाता है।

* हिन्दी माषा की प्रकृति व भाषणिक अतर की हिन्दी की कमज़ो

हिन्दी एक माषा है, माषा शब्द संस्कृत की (माष) धातु से निर्मित है। जिसका अर्थ है 'बोलना'। माषा मनुष्य के मुख से निकली हुई वह सार्थक वर्णनीय है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। हम अपने बातों की बोलकर या लिखकर पहुँचा सकते हैं और सुनकर या पढ़कर ग्रहण कर सकते हैं।

मानव वर्तमान की तरह हिन्दी माषा का सीरियर वर्तमान होता है। हिन्दी की प्रकृति निम्नलिखित है -

i) सामाजिकता - माषा के विवर समाज का होना जरूरी है। बिना समाज के माषा की कम्पना नहीं की जा सकती है।

ii) अर्जनीय - उच्चे अपने माता-पिता, घर परिवार द्वारा सुनते-सुनते खुद ही इसे ग्रहण कर लेते हैं।

iii) परिवर्तनशीलता - माषा निरंतर परिवर्तनशील होता है। समय के साथ इससे बदलाव आते रहते हैं।

iv) गतिशीलता - माषा कोई अंतिम क्षण नहीं है। यह कदा गतिमान रहकर विकास करती है।

मातृभाषा - माँ के द्वारा सीखी गई हुई मातृभाषा मातृभाषा कहलाती है। माँ के ने होने पर धर-परिवार, आस-पड़ोस द्वारा बतायी गई हुई भाषा मातृभाषा कहलाती है।

शिक्षण

मातृभाषा का उद्देश्य - इस माध्यम से बच्चे अपने विचारों की सुगमता और सुलभता से व्यवहर कर पाते हैं।

हिन्दी शिक्षण का समान्य उद्देश्य -

- बच्चे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना सीख जाते हैं।
- इस भाषा के द्वारा अपने विचारों को व्यवहर करने का निपुणता प्राप्त कर सकते हैं।

हिन्दी भाषा का विविध उद्देश्य -

- इकानि वर्ष, उच्चारण, शब्द और वाक्यों का ज्ञान ही जाता है।
- सामान्य व्याकरण का प्रयोग करना सीख जाते हैं।
- शुद्ध-शुद्ध पढ़ना, लिखना, बोलना सीख जाते हैं।
- तत्त्वज्ञ, घटनाओं, कहानी, कीरिताओं का ज्ञान हो जाता है।
- अपने विचारों को अभिव्यक्त करना ज्ञान जाते हैं।
- किसी भी घात को पढ़कर, सुनकर, उसका अर्थ शाहन कर लेते हैं।

प्राचीनकाल तर पर हिन्दी की समझ

प्राचीनकाल तर पर बच्चों पहले बोलना की जाती है। उसके बाद उन्हें वर्णों का ज्ञान दिया जाता है। उन्हें सुनना सीखाया जाता है। वर्णों के बाद शब्द और शब्द के बाद वाक्य सीखाया जाता है। प्राचीनकाल तर पर बच्चे धीरे-धीरे अपने कर

के लातों की पढ़कर गा बीतकर समझने लगते हैं। हालांकि वो पुरा अर्थ शाहन नहीं कर पाते हैं। च्याकरण के कुछ ही लातों को वो समझते हैं जैसे - तड़की के तिरु पढ़ता है, और लड़कों के तिरु पढ़ती है। लेकिन यह भी वो बीतचाल की माषा द्वारा सीखते हैं। च्याकरण की कुछ खास जान उन्हें होता नहीं है। हिन्दी भेषण की दो रूपों का समझ उनमें विकसित हो जाता है - पहला विवरा और दूसरा कहानी।

* राज्यीय पाठ्यचर्चा की नव्यरेखा - 2005 और बिहार पाठ्यचर्चा की नव्यरेखा - 2008 के आसीन में हिन्दी माषा के उद्देश्यों को समझना

राज्यीय शिक्षा नीति 1986 में ही यह सिफारिश की गई थी कि शिक्षा को प्रिमन्न अवधारणाओं में हीने वाली कौशलों के साथ जोड़ा जाए, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। शिक्षा नियम पाठ्यपुस्तकों की परीक्षाओं तक सीमित रह गया। तर्धे 2000 में पाठ्यचर्चा की नव्यरेखा से सभीक्षा के बाद सी इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ। लेकिन वर्तमान सभीक्षा इसमें बदलाव लाने की कौशिक्षा कर रही है और नयी स्कूली शिक्षा की इस समय के ओवरलैट क्षेत्रों से जोड़ने का कौशिक्षा कर रही है। इस प्रथासे अनेकों आधारों पर ध्यान रखा जाया है-

जीसी-शिक्षा के लक्ष्य, उत्तरों के सामाजिक परिव्रेक्षय शोन की प्रकृति, मानव विकास की प्रकृति और मनुष्य की सीखने की प्रकृति इत्याद् राष्ट्रीय पाठ्यचयां की कृपरेखा 2005 का छापासयत थह है, कि थह भवीतापन तथा गुणवत्ता पर धम देती है।

मार्गदर्शक: विस्तृत

- i) शोन की दृक्षुल के बाहर के शोन से जीड़ना,
- ii) पहाड़ को रंगत पुणाली से छुकत करना और थह चुनाविकास करना,
- iii) उत्तरों की विकास के चक्रमुखी विकास के अवसर सुहेता करवार ताकि वो पाठ्यपुस्तक-कंट्रिट बनकर न रह जाए,
- iv) कक्षाकाल को गतिविधियों से जोड़ा जाए तथा परीक्षा में भवीतापन लाया जाए, और
- v) उत्तरों के मान से राष्ट्रीयत, तथा प्रजातांत्रिक राज्य-स्थानक विभिन्न भावना जागृत करना।

⇒ राष्ट्रीय पाठ्यचयां की कृपरेखा 2005 के आलोक में हिन्दी भाषा का उद्देश्य निम्नलिखित है-

भारत उद्धमार्षिक देश है। यहाँ अनेकों भाषा का प्रयोग किया जाता है। उद्धमार्षिकता को समस्या अहीं राष्ट्रिक अंसाधन के रूप में लेना, यहिरु उत्तरों की किसी भी भाषा की शिक्षा उनके मातृभाषा या घरेलु भाषा में देना चाहिर। क्योंकि इस भाषा होरा उच्च अपने बातों की सहज और

NCERT → National Council of Educational Research & Training
→ राष्ट्रीय शिक्षक अनुसंधान और परिकाण
परिषद्

SCERT → State Council of Educational Research &
Training

स्पेशल कृपा से लेकर कर सकते हैं हिन्दी माध्यम
शिक्षा के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं-

- i) बच्चों में हिन्दी पढ़ने-लिखने का विकास करना
- ii) वर्ण, उच्चन, शब्द, वाक्य से परिचित करना
- iii) हिन्दी माध्यम का उचित प्रयोग करना, सीखाना
- iv) किसी भी लिखी हुई लातों को पढ़कर उसके अर्थ को समझने का विकास करना।
- v) हिन्दी सीखने के लिए समृद्ध व रूचिकर सौकड़ा दिना
- vi) हीरेल माध्यम के प्रार्थना उचित समान रखना।
- vii) बच्चों से गतिविधियों हो तो उसे आशम से समझाना।
- viii) कहानी, कविता, नाटकों द्वारा हिन्दी का शिक्षा देना।
- ix) सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दैरियां बालकोंटुरा प्रतिविधियों का आज आयोजन करना।
- x) विशेष बच्चों के लिए छैल जैव संकेत।
माध्यम का प्रयोग करना।

⇒ बिहार पाठ्य-चयनी की कंपरेंसी 2008

BCF (Bihar Curriculum Framework) 2008

BCF 2008 SCERT द्वारा प्रकाशित किया गया है।
NCF 2005 के प्रकाशन के बाद SCERT की महसूस हुआ कि बिहार पाठ्य-चयनी की कंपरेंसी में भी समर्थन सार लदलात हीना चाहिए। अतः NCF 2005 के आधार पर BCF 2008 का निर्माण किया गया। बिहार में हिन्दी माध्यम की प्रथम माध्यम कृपा में पर्सनल किया जाता है।

बिहार पाठ्यचर्ची की रूपैयोग में माषा शिक्षण के संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्ययी की गई है :-

- i) बिहार में अनेक माषाओं का प्रयोग घरेलू माषा की तरह किया जाता है, शिक्षकों को बच्चों को हिन्दी माषा का बानू इससे जोड़ के देना चाहिए।
- ii) कूलभी माषा पाठ्यचर्ची का महत्वपूर्ण मार्ग होता है। यह संवाद, सम्प्रेषण के साथ-साथ अन्य विषयों की शिक्षा के लिए अनिवार्य है।
- iii) माषा सीखने की क्षमता जन-मज़ात हीनी है और यह हमें विश्वास में मालता है। लेकिन उसके विषय विशेष पक्षों का विकास तथा अन्य माषा की सतत प्रगति कारण ही ग्रहण किया जा सकता है।
- iv) माषा शिक्षण की सिफी साहित्य तक कोट्रित नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह अन्य विषयों में लोच लढ़ाने के लिए भी हीना चाहिए।
- v) पाठों को चर्चन और अध्यापन विद्या में धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता का ध्यान रखना चाहिए।

शिक्षकों की इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह विषय विभिन्न विषयों की अवधारणाओं का नींव रखती है तथा उन्हें बच्चों को सीखाने वक्त उचित अवसर और शुल्कियाएँ देनी चाहिए।

इकाई - 2 : प्राथमिक शृंति की हिन्दी : पाठ्यचर्चा - पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समझ

⇒ पाठ्यचर्चा - पाठ्यचर्चा विद्यालय शिक्षा का केंद्र बिंदु है। इसमें सभी विषयों के उसके पाठ्यक्रमों का विवरण रहता है। पाठ्यक्रम के साथ - साथ अन्य गतिविधियों जैसे - गीग, खेल - कूद, गीत - संगीत इत्यादि का जानकारी रहता है। इसमें इसी बात की जी उन्नीख 2हता है कि किसी कान्त में कौसे और कितने समय में पाठ्यक्रम को व्यवस्थित नरीके से पुरा किया जा सकता है। इसको शिक्षकों को देश - निर्देश प्राप्त होता है।

⇒ पाठ्यक्रम - पाठ्यक्रम दो शब्दों के ग्रोग से बना है "पाठ्य + क्रम" अशान्त पढ़ने ग्रोग विषय - वस्तु का क्रम। इसमें कक्षानुसार सभी विषयों का अलग - अलग पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। यानि पढ़ने ग्रोग विषय - वस्तुओं की क्रमबद्ध किया जाता है, कक्षा के अनुसार। इसी के आधार पर शिक्षक शिक्षण कार्य करते हैं। सभी विषयों के शुरूआत के पन्नों पर पाठ्यक्रम का विवरण रहता है।

* बिहार के प्राथमिक और पर हिन्दी की पाठ्यचर्चा-पाठ्यक्रम का उद्देश्य

⇒ पाठ्यचर्चा-पाठ्यक्रम का उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

- i) छात्रों का उद्देश्य विकास करना।
- ii) छात्रों की कृचयों, क्षमताओं तथा गोप्यताओं का विकास करना।
- iii) छात्रों में इमानदारी, निरुद्धा और उनके व्योवहार क्षमता का विकास करना।
- iv) लोकों को सांस्कृतिक, सामाजिक और सूचनों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
- v) ऐसी वातावरण का निर्माण करना जिसमें वे नवीन ज्ञान प्राप्त कर सकें।
- vi) उनमें कल्पना-शक्ति, चिंतन और निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।
- vii) उन्हें विषयगत सभी विषयों का शिक्षा प्रदान करना।
- viii) समाजिक, कुरीतियों से अवगत करना।
- ix) मानवता के दृष्टिकोणों का विकास करना।
- x) प्रजातंत्र का मावना विकसित करना।
- xi) आदर्श नागरिक भवनों के लिए प्रेरित करना।
- xii) देश प्रेम की मावना विकसित करना।

* प्रार्थनाक रूप की पाठ्यचर्चा - पाठ्यक्रम की संरचना

⇒ संरचना / स्वरूप / प्रकृति निम्नलिखित है -

- i) पाठ्यचर्चा - पाठ्यक्रम बाबकंद्रित होना चाहिए।
- ii) इसमें भव्यीतापन होना चाहिए।
- iii) वातावरण के अनुसार होना चाहिए।
- iv) जीवन उपयोगी होना चाहिए।
- v) पूर्ण लोन पर आधारित होना चाहिए।
- vi) कृत्याशीलता के सिद्धांत अनुसार होना चाहिए।
- vii) छात्रों के क्षमता अनुसार होना चाहिए।
- viii) शैक्षणिक उद्देश्यों अनुसार होना चाहिए।
- ix) बच्चों के मानोंसक रूप के हिसाब से होना चाहिए।
- x) समाज के आवश्यकतानुसार होना चाहिए।
- xi) ग्रन्थितात विभिन्नता का ध्यान रखना चाहिए।
- xii) प्रजातंत्र का समझ विकसित करने वाला होना चाहिए।
- xiii) राष्ट्रीय मानवाओं को विकसित करने वाला होना चाहिए।

* प्रार्थनामक कलर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों के वर्ष अनुच्छान प्रश्नों की प्रकृति की समझ

⇒ पाठ्यपुस्तक - पाठ्यपुस्तक का अधिगम का एक साधन है, जिसका प्रयोग कर शिक्षण कार्य पुरा किया जाता है। यह कक्षानुसार वित्त और शिक्षकों के लिए तैयार किया जाता है। इसी विषयों का अपना - अपना पाठ्यपुस्तक होता है, जिसमें उस विषय का कोई का जानकारी नहीं होता है।

⇒ हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों की प्रकृति

i) पाठ्यपुस्तक में गद्य और पद्य में विविधता होना चाहिए।

ii) गद्य - पद्य का अनुपात 1 : 1 होना चाहिए।

iii) कहानियाँ, लीख और पत्र जैसी होना चाहिए।

iv) दश प्रेम से लुड़ा एक कहानी या कविता होना चाहिए।

v) पशु - पक्षियों से लुड़ी एक पाठ होना चाहिए।

vi) किसी त्रौहार पर एक पाठ होना चाहिए।

vii)

स्थानकरण के कुछ बिंदु जो होने चाहिए -

i) संशा और उसके भौदों की पहचान

ii) वर्चन और उसके भौदों की पहचान



⇒ हिन्दी के अन्यास प्रश्नों की प्रकृति

- i) प्रत्येक पाठ के साथ विभिन्न प्रकार के प्रश्न होने चाहिए।
- ii) प्रश्न पाठ पर आधारित होना चाहिए।
- iii) प्रश्न कैसा होना चाहिए जिससे बच्चों के अस्तुमान लगाने का क्षमता, कल्पनाशीलता, स्टेजनार्मकता, अभियोगित का विकास हो।
- iv) प्रश्न इस प्रकार से होना चाहिए, जिससे बच्चों का चिंतन शक्ति का विकास हो।
- v) अन्यास में व्याकरण निर्धारित बिंदुओं से भी कुछ प्रश्न होने चाहिए।

इकाई ३ माधारी क्षमताओं का विकास : सुनना व लेखना

* माधारी क्षमताओं की संकल्पना : विचान्न माधारी क्षमताएँ और उनके बीच आपसी संबंध

बच्चों से माधा सीखने की सहज और जन्मजात क्षमता होती है। विद्यालय आर्ने से पहले वीं अंचल खासा माधारी ज्ञान ओरिजिन कर चुके होते हैं। हमारे यहाँ बहुत सारे माधाओं का प्रयोग किया जाता है। बच्चे सबसे पहले मातृभाषा सीखते हैं। वीं माधा जो उन्हें माँ द्वारा सीखाया जाता है। विद्यालय आर्ने से पहले उन्हें घर-परिवार, आस-पास के द्वारा लोकी जाने वाली माधा की जानकारी होती है। यह व्यानीय माधाएँ होती हैं। समान्यतः बच्चों को मातृभाषा या व्यानीय माधा की जानकारी होती है। लेकिन विद्यालय में एक मानक माधा का प्रयोग किया जाता है। यह मातृभाषा हिन्दी माधा को सीखने से अहम सुनिका बनाती है। इससे बच्चे आसानी से हिन्दी माधा सीख जाते हैं।

* सुनने व लेखने का अर्थ

⇒ सुनना - किसी सीधीकृत द्वारा उच्चारित सार्थक शब्दों, शब्दों तथा वाकओं की कानों से सुनाकर उनके अर्थी तथा मनोभावों को समझना अथवा समझने की योग्यिता प्राप्त करना अवण कौशल कहलाता है।

⇒ बोलना - वर्णों के संहार्थोंग से मुश्त्र से बोलने वाली दृवीन (सार्थक दृवान) को बोलना कहते हैं।

* सुनने व बोलने की प्रभावित करने वाले कारक

i) भासकों की शारीरिक व मानसिक दशा आ अतः

ii) विषय - वस्तु की कीरनाई अतः

iii) पाठ्य - वस्तु की शब्दावली

iv) पाठ्य - वस्तु की शैचक्ति

v)

* प्रार्थमिक अतः के बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास

कक्षा में बच्चों की सुनने और बोलने का पथरित क्रमाय दिया जाये। ३-हे अपनी बातों को कहने का सीका दिया जाये। बच्चों कहानी, कविता बहुत ही पसंद होती है, इसीलिए ३-हे व्याख्याकर कहानी सुनाना चाहिए। कविता को भयबहूँ करके सुनाना चाहिए, इससे वो सुनेंगे और आरंभ होने वाली बातों को अपनी भाषा में अपने दौरतों आरंभिकर के लिए सुनायें। जिससे उनके सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास होगा। ३-हे अपनी बात, अपने बारे

में बात, अपने दोस्तों व परिवार के बारे में
 बात, और उन्होंने एक बात करने का
 अवसर देना चाहिए। चतुर के द्वारा कहानी स्थान
 का सौंकड़ा देना चाहिए। नाटक, शैल-ट्रैल का
 आयोजन करना चाहिए। इन सब से उनका
 आनंद सांख्यिकी से लगेगा और उनके क्षमताओं का
 लिंगकास लोगा।

* साधा सीखने के संकेतक: कुनने और बीलने
 के संदर्भ में

साधा अंतर्वित का सशब्द माहौल है। साधा
 हारा ही हम छुह लिख, पढ़ या लौल सकते हैं
 उच्चे साधा वर्ता। सीखने लगते हैं किंतु शिक्षण
 के समय सीखने के संकेतकों के द्वारा निर्दिष्ट
 वातों का ध्यान इन्होंना चाहिए। जो कि निम्न
 है-

- संकेतक विद्यार्थियों की आयु, अतर और आवश्यकताओं
 के अनुसार हो।
- संकेतकों से बच्चों के परिवेश का कोई विशेषज्ञ हो।
- संकेतक व पाठ्यक्रम आपस में सम्मानोंजात हो।
- सीखने - सखाने की प्रक्रिया व माहौल एवं चिकित्सा
- संकेतकों के पृथ्येय के समय समावेशी कक्षा के
 माहौल पर ध्येय किया जाए।

- N.C.E.R.T निम्न वातों को ध्यान में रखी है-
- पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ
- परिवेशीय संज्ञान
- सीखने के तरीके तथा माहौल

⇒ शुनने - बोलने के संदर्भ में

- पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ

- ि हिंदी अद्यापकों के निर्देशों को ध्यान से सुनना
- ि दोटी - दोटी कविताओं व कहानियों का आनंद पूर्वक सुनना और कठंसा करना
- ि मात्रा रीहत शब्दों को जोड़कर सुनना ऐसे का लगाना
- ि मात्रा रीहत शब्दों को सुनना
- ि शब्दों को सुनकर कहने का प्रयास करना

- परिवेशीय संज्ञाता

- ि आख - पास की प्रकृति को देखना और अपना रख लेना
- ि धरेलू माषा व हिंदी माषा के बीच संबंध ग्रहण करना
- ि कक्षा की वातावरण व सहपाठियों के साथ सामंजस्य होना

- सीखने के तरीके व साहीत

- ि अपनी माषा से बातचीत करने की वित्तिगत संव अवसर देना
- ि शिक्षकों को सिन्न - सिन्न विधियों का प्रयोग करना - चित्र विधि, खेल विधि, प्रयोग विधि
- ि दोटी कहानी, कविताओं पर बात करने का अवसर देना
- ि मारतीय त्योहरों, महापुरुषों के जन्म दिवसों, पर गीत, कविताओं इत्यादि के आशोजन का अवसर देना
- ि अपने परिवार, स्कूल, दौस्तों के बारे में बोलने का मैला देना

इकाई 4: पढ़ने का क्षमता का विकास

* पढ़ने का अर्थ: शुरूआती पढ़ना तथा ही शुरूआती 'पढ़ना' की चरणबद्ध प्रौद्योगिकी की समझना

⇒ पढ़ना - लिखित शब्दों का शुरू - शुरू उच्चारण करना पढ़ना कहलाता है

⇒ एविन - फैफड़े से उत्पन्न वायु प्रूग्गें के माध्यम से मुख के विभिन्न बाधाओं से होते हुए आता के अवण तेजों तक पहुँचकर जो उत्तराधि उत्पन्न करता है, उसको एविन कहते हैं।

* पढ़ने की प्रौद्योगिकी

पढ़ने का अर्थ सिफ्ट लिखी हुई बातों को देखकर बोलना नहीं होता है बर्तक उसका अर्थ समझना होता है जब्तक शुरूआती समय से ही अर्थ समझने नहीं लगते हैं। पढ़ने की प्रौद्योगिकी की विभिन्न सौपान निम्नलिखित हैं-

i) क्रता उलटना - पलटना

ii) अनुमान लगाना - हुए पढ़ना - चित्र देखकर अनुमान लगाना या कीवता याद रहने पर अनुमान लगाकर पढ़ना

iii) लिपि पहचानना - शब्द देखकर चित्र का संकेतक में अनुमान होना

iv) अर्थ समझना - पढ़कर उसका आशाय समझना

v) प्रतीक्षा देना - लिखी हुई बातों को पढ़कर अपना विचार प्रकाट करना

vi) पढ़कर सार प्रस्तुत करना - पढ़ा हुआ बातों को अपने माध्यम से संक्षिप्त में बोलना

⇒ पढ़ना वा वाचन में अंतर

पढ़ना - लिखित वस्तुओं को बोलते समझ
समझ - समझ कर अर्थ ग्रहण करते हुए
फिर बोलना पढ़ना कहलाता है। इससे
छठचों की विषय - वस्तु के बारे
में समझ विकासित होता है और
उनका ज्ञान वृद्धि होता है।

वाचन - जिन समझे हुए वस्तुओं पर वाचन
करते हुए बोलना वाचन कहलाता है।
इससे विद्यार्थी शुहू - शुहू बोलना
सीख जाते हैं। लोकतंत्र उनका विषय -
विवरण पर समझ विकासित नहीं
हो पाता है।

* पढ़ने का प्रकार

⇒ सर्वपठन - लिखी हुई बातों को उचित के साथ पढ़ना और अश्वभाषना सहित सर्वपठन कहलाता है। यह वाचन की प्राशासक अवस्था होती है। वर्त्ते शुरूआत में सर्वपठन ही करते हैं। इस वाचन में विशमा निही, पूर्ण विशम का उचान रखा जाता है। शुद्धता व पृष्ठता का जी उचान रखा जाता है। इससे वर्त्तों का आमावश्वास बढ़ता है।

⇒ मौन पठन - भिन्नत सामग्री को मन ही मन अश्व ग्रहण करते हुए पढ़ना। मौन पठन कहलाता है। इससे वाचन की गति से विकास आता है। तृश्यों त्रिश्यों जावों की कमजूता की पढ़वान होती है। जावों को समझकर उपना विचार रख पाते हैं। सौचने-समझने की शक्ति से विकास उपनन होता है।

⇒ ग्रहन पठन - ग्रहन पठन के द्वारा हम पाठ्य सामग्री के जाव, विचार, माषा, शीली त्रिश्यों कल्पात्मक सीधर्यों की व्यवस्था करते हुए पढ़ते हैं। इसके तहत जावों का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है। विचारों के उतार-चढ़ाव को समझा व महसूस किया जाता है। इस पठन में पाठक सभी पात्रों का कल्पना करता है। और उसके सभी विचारों को समझता है।



iv) विस्तृत पठन - इसे त्र्यापक पठन की कहते हैं किसी भी विषय-वस्तु के बारे में ज़ुड़ा हर बातों का विस्तृत रूप में पढ़ना अभियर्थक त्र्यापक पठन कहलाता है। इससे पढ़ने की व्यवस्था का विकास होता है। तीव्र गति में पढ़ने की दक्षता में विकास होता है। अद्यतनशील प्रगति में विस्तृत पठन सहायता करता है।

v) शब्द और अर्थों का अनुमान लगाते हुए पढ़ना
यह पढ़ने की प्रक्रिया का शुरू-आती हिस्सा है। जब शब्दों को वर्णों और शब्दों का बोन भी नहीं होता है, तो किताबों में चित्र देखकर वहाँ पर लिखी हुई बातों का अनुमान लगाते हुए लिखी हुई बातों को चित्र से जोड़ते हैं। और उपने कत्ते पर अर्थों का निमाण करते हैं।

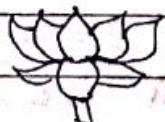
vi) स्टिकप रीडिंग - जब पाठक किसी वाक्य के सभी शब्दों की नहीं पढ़ते हैं और उसके एक-दो शब्दों की पढ़कर समान्य अर्थ निकालते हैं, इसे स्टिकप रीडिंग कहते हैं। बड़े-बड़े नाटक, उपनायक, को को पाठक सरसरी निगाहों से पढ़ते चले जाते हैं।

vi) कैन रीडिंग :- किसी सूचनापट, शादी- कार्ड या इसी तरह के अन्य लिखित समझी पर ओकेट सूचना को सरसारी निःगाहों से पढ़ने का क्रिया 'कैन रीडिंग' कहलाता है। इससे इसमें सम्पूर्ण समझी को नहीं पढ़कर उसपर विशेष सूचना पर ध्यान दिया जाता है।

* पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके और उनकी सभी क्षात्रिक समझ : वर्ण विद्य, शब्द विद्य, वाक्य विद्य, अर्थपूर्ण संदर्भ माध्यमिक उपायम्

⇒ वर्ण विद्य - इस विद्य में जब वर्त्तकों को वर्ण का बोन हो जाता है तब उन्हें शब्द असमझा जाता है। जैसे - अ, न, र = अनार। यह विद्य वर्त्तकों को नीरस लगता है और वर्त्तक वर्णमाला उनसे धबराते हैं।

⇒ शब्द विद्य - शब्द विद्य में वर्त्तकों को चित्रों के माध्यम से पहले शब्द से परिचय कराया जाता है। यह विद्य आकषक वर्णाचक होती है। जैसे



कमल = क + म + ल

⇒ वाक्य विद्य - इस विद्य में पढ़ने का कार्य वाक्य से आरेम किणा जाता है। मनोविज्ञानिकों को कहना है वर्त्तक शब्द या वर्ण से मात्रों को नहीं समझ सकते हैं अतः उन्हें वाक्य विद्य से पढ़ना सिखाया जाना चाहिए। जैसे- शीती गोल है, घंटा गोल है, पैंती गोल है।

इससे बच्चे अग्री समझाएँ और उनका समझ विकासित होगा।

⇒ संदर्भ आधारित विद्या - कक्षालुकार चित्र, घटना, हृशि, कविता, हाश पढ़ना, सीखना। बच्चों के रुचि को ध्यान में रखकर संदर्भ चुना जाता है।

* पढ़ना सीखने - सीखने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की सुनिका

पढ़ना सीखने - सीखने में बाल साहित्य का अहम सुनिका है। सबसे पहले बच्चे इसमें बने रंग-बिरंगे चित्र देखकर आकर्षित होते हैं और इसे उलटना - पलटना शुरू करते हैं। उलटना - मट पलटना पढ़ने का प्रथम सोपान हो जाते चित्र के माध्यम से कहानी की समझने का कौशिश करते हैं। फिर से पढ़ना शुरू करते हैं। चंदामामा, चंपक, नंदन अकबर - बीखल, मीठ - पलतू जैसे अनेकों किताबें बच्चों में लोकप्रिय हैं। इसमें कहानी और कविताएँ होती हैं। जिसमें बच्चे रुचि लेते हैं। बच्चों को कविता जट्ठी थाद भी हो जाता है और वो गुनगुनाने लगते हैं। कहानी पढ़कर वो अपने वीरतों और परिवार के सदस्यों को सुनाने लगते हैं। इससे वो पढ़ना तो सीखते ही साथ साथ उनका समझ भी विकासित होता है।

प्रभाष शीखने के संकेतक : पढ़ने के संदर्भ में

- i) चित्र देखकर अनुमान लगाकर पढ़ना
- ii) हिन्दी शब्दों को देख - सुनकर समझना रख पढ़ना
- iii) हिन्दी के वर्णों रख साजाओं को पढ़ना
- iv) साजा रहित और साजा रहित शब्दों को पढ़ना
- v) सुनकर वाचन करना
- vi) साजा वाचन करने के बोयच बनाना
- vii) लिखी हुई वस्तुओं को पढ़ना छारीद